ऊंचाइयों पर शेयर बाजार

एनएसई सूचकांक निफ्टी इस सप्ताह 10,000 की मनोवैज्ञानिक सीमा को पार कर गया। बीएसई सूचकांक सेंसेक्स पहले से ही 32000 की सीमा के ऊपर चल रहा है। भारतीय शेयर बाजारों का यह रुख कारोबारी जगत में राजनीतिक स्थिरता से उपजी निश्चिंतता का संकेत लगता है। चाहे सीमा पर पाकिस्तान और चीन के साथ चल रहा हालिया विवाद हो या देश के अंदर गोरक्षा आदि के नाम पर होने वाली छिटपुट घटनाएं- इस तरह की बेचैनियों का असर कम से कम निवेशकों के मूड पर तो बिल्कुल नहीं दिख रहा। मोदी सरकार के आने के बाद से जिस तरह चुनाव-दर-चुनाव बीजेपी को बढ़त मिलती जा रही है, उसने निवेशकों को आश्वस्त किया है कि आने वाले कुछ वर्षों तक देश में राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिरता कायम रहने वाली है। जीएसटी जैसे बड़े कदम का व्यवहार में असर अभी पूरी तरह दिखना शुरू नहीं हुआ है, लेकिन इससे सुधार को लेकर सरकार की प्रतिबद्धता रेखांकित हुई है। इसके चलते निवेशकों की यह धारणा मजबूत हुई है कि आने वाले समय में सरकार न केवल निवेश के अनुकूल माहौल बनाए रखेगी बल्कि अन्य जरूरी सुधारों की ओर भी अपने कदम बढ़ाएगी। यह उम्मीद ही भारत के शेयर बाजारों को वह ऊर्जा दे रही है, जिसके सहारे ये लगातार अपना चढ़ना जारी रखे हुए हैं। हालांकि अमेरिकी वीजा विवाद आईटी कंपनियों की चिंता का कारण बना हुआ है। खाड़ी क्षेत्रों से मेहनतकश भारतीयों का पलायन वहां से आने वाले मनीऑर्डर का प्रवाह भी बाधित किए हुए है। निर्यात में भी किसी बड़े इजाफे की सूरत फिलहाल नहीं दिख रही है। हां, कच्चे तेल की कीमतें स्थिर हैं और मॉनसून का रुझान ठीकठाक है। इतने कमजोर ट्रिगर पॉइंट्स के बावजूद अगर शेयर बाजार ने बढ़त का माहौल बना रखा है तो वह निवेशकों के बीच बने विश्वास का ही नतीजा है। यहां एक बात गौर करने की है कि सेंसेक्स और निफ्टी की ऐसी मजबूती भी देश के आम लोगों को बाजार की ओर नहीं खींच पा रही है। 2007-08 के बाद जो इस तबके का शेयर बाजार से मन फटा तो फिर अब तक जुड़ नहीं सका है। सेबी और अन्य नियामक एजेंसियों को अपना ध्यान बाजार में उसकी वापसी पर लगाना चाहिए।

सबसे ऊपर सुशासन

नीतीश कुमार ने एक बार फिर बीजेपी से हाथ मिलाकर सबको चौंका दिया है। उनके इस फैसले को पारंपरिक सियासी मुहावरों से नहीं समझा जा सकता। इसे बदलते परिदृश्य के संदर्भ में ही समझना होगा। सच्चाई यह है कि 2015 में बिहार विधानसभा चुनाव का जनादेश बीजेपी की सांप्रदायिक राजनीति के खिलाफ तो था ही, लेकिन उतना ही वह नीतीश की व्यक्तिगत छवि और उनके विकास मॉडल के पक्ष में भी था। याद कीजिए, उस चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी हिंदुत्व की नहीं अपने विकास मॉडल की बात ज्यादा करते थे और अपनी बात को दमदार बनाने के लिए उन्होंने एक डिवेलपमेंट पैकेज भी घोषित किया। फिर भी लोगों ने उनके मॉडल को नकारकर नीतीश के विकास मॉडल को पसंद किया, जिसमें समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने की बात थी। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि लालू प्रसाद यादव जनता के इस नए मिजाज को समझ नहीं पाए। वक्त के हिसाब से खुद को बदलने के बजाय उन्होंने अपनी पुरानी शैली जारी रखी। राज्य सरकार में अपने दोनों बेटों को शामिल किया और बेटी को राज्यसभा भेजा। यही नहीं, शहाबुद्दीन जैसे बाहुबली नेताओं को खुलेआम संरक्षण देना जारी रखा। उन पर और उनके परिवार पर जिस तरह एक के बाद एक संपत्ति बनाने के आरोप लगने शुरू हुए, उससे राज्य सरकार की किरकिरी होने लगी। पटना में एक मॉल बनाने के दौरान निकली मिट्टी को सरकारी पैसे से खरीदे जाने का प्रकरण सार्वजनिक हो जाने के बाद यह बात शायद ही किसी के गले उतरे कि लालू परिवार पर लगे सारे आरोप राजनीतिक बदले की भावना से प्रेरित हैं। जो नीतीश कुमार आरोप लगते ही अपने मंत्रियों का इस्तीफा ले लेते रहे हैं, उनके लिए इस हकीकत के साथ एडजस्ट करना कठिन था कि उनके डिप्टी सीएम गंभीर आरोपों से घिरे हैं। उन्होंने आरजेडी को अपनी गलती सुधारने के मौके भी दिए। इसके बावजूद तेजस्वी यादव को अपना पद छोड़ने पर राजी नहीं किया जा सका तो नीतीश ने वही किया जो वे कर सकते थे। उन्होंने खुद इस्तीफा दिया और राज्य पर एक मध्यावधि चुनाव थोपने की जगह बीजेपी के समर्थन से सरकार बनाई। अब खुद को मिले जनादेश का आदर वे इसी रूप में कर सकते हैं कि राज्य में विकास की गति बढ़ाएं और बीजेपी के सांप्रदायिक अजेंडे को अमल में न आने दें। इस बीच नीतीश ने भारतीय राजनीति के सेकुलर धड़े को यह सबक भी दिया है कि जनहित से परे जाकर किसी भी विचार का कोई अर्थ नहीं है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अगर आप भ्रष्टाचार का बचाव करते नजर आते हैं तो इसमें सबसे ज्यादा नुकसान धर्मनिरपेक्षता का ही है। बहरहाल, अभी की बीजेपी को साथ लेकर चलना नीतीश के लिए पहले जितना आसान नहीं होने वाला है। जितने भी दिन वे शांति से सरकार चला सकें, बिहार के लिए उतना ही अच्छा है।

पूर्व नियोजित ड्रामा

बिहार में राजग के साथ गठबंधन वाली सरकार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी अंतर्रात्मा की आवाज सुनते हुए कल शाम इस्तीफा देकर बृहस्पतिवार को एनडीए के समर्थन से सरकार का पुनर्गठन करके दोबारा मुख्यमंत्री पद की शपथ भी ले ली। तेजस्वी प्रसाद के इस्तीफे को लेकर लालू प्रसाद की बोल-वाणी से शायद नीतीश कुमार आज़िज़ आ गए थे। तेजस्वी प्रसाद लालू प्रसाद के बेटे हैं और गठबंधन सरकार में उपमुख्यमंत्री रह चुके हैं, जिनके खिलाफ सीबीआई ने भ्रष्टाचार के मामले में केस दर्ज किया है। नीतीश के इस पग से कांग्रेस और राजग के साथ जद-यू के महागठबंधन की गिरहें एक-एक करके खुलने लगी हैं। दरअसल भ्रष्टाचार के मुद्दे पर नीतीश कुमार ने वैसा ही अभिनय किया जैसा भाजपा द्वारा लिखी पटकथा में इंगित था। अच्छी-खासी चल रही स्थायी सरकार औंधे मुंह गिरी। केंद्र में बैठी भाजपा सरकार ने बदले में संतुष्टि तथा चैन की सांस ली कि आखिर सीबीआई व ईडी का फेंका उनका पासा खूब चल निकला। दरअसल नवंबर, 2015 में हुए बिहार विधानसभा चुनावों में लालू-नीतीश के गठबंधन को मिली आशातीत सफलता एक तरह से मोदी नेतृत्व के लिए किसी तीव्र झटके से कम नहीं थी। इस चुनावी विजय ने नीतीश कुमार का कद इतना बड़ा कर दिया कि लोग उन्हें 2019 के चुनावों में मोदी को चुनौती देने वाले शख्स के रूप में स्वीकारने लगे थे। अब इन कयासों पर विराम लग गया है। हालांकि, नीतीश कुमार की इस बात को लेकर तारीफ की जानी चाहिए कि उन्होंने सच्चाई के लिए अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी को दांव पर लगा दिया लेकिन कानूनन एक बात उनसे पूछी जानी चाहिए कि जब जेडी-यू तथा आरजेडी गठबंधन की नींव रखी गई तो क्या नीतीश कुमार को लालू परिवार के खिलाफ चल रहे आरोपों की जानकारी नहीं थी? अदालत के सम्मुख दोषी करार दिए गए यह लालू प्रसाद ही थे जिन्होंने 2015 के विधानसभाई चुनावों में गठबंधन के लिए धुआंधार प्रचार किया था। तब भी वोटरों ने लालू को खूब वोट दिए, नतीजतन आरजेडी एक बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। शायद अब नीतीश कुमार को लगता है कि सीबीआई के दोषारोपण ने पहले के हालात बदल दिए हैं। उपमुख्यमंत्री को कैबिनेट से हटाने की उनकी इच्छा को सम्मान नहीं दिया गया, इसीलिए उनकी अंतर्रात्मा ने उन्हें अपने पद से इस्तीफा देने के लिए उकसाया। सिद्धांतों की बात करने वाले नीतीश कुमार सैद्धांतिक रूप से अब इस नयी स्थिति में काम कैसे करेंगे? 2015 नवंबर के चुनावों में उन्हें मोदी, भाजपा तथा उनकी साम्प्रदायिक राजनीति के खिलाफ जनादेश मिला था। नीतीश कुमार तथा भाजपा के बीच किसी तरह का भी 'वर्किंग अरेंजमेंट' सैद्धांतिक तौर पर सही नहीं कहा जाएगा। दरअसल आजकल भ्रष्टाचार ऐसा हथियार बनकर रह गया है, जिसे अपना हित साधने के लिए कोई भी अवसरवादी इस्तेमाल में ला सकता है। संक्षेप में कहें तो नीतीश कुमार तथा बिहार दोनों ही घाटे में रहेंगे।

पिता के एहसास को सुविधा का संबल

हाल ही में मुंबई की टेक कंपनी सेल्सफोर्स ने अपने पुरुष कर्मचारियों को पिता बनने पर तीन महीने की पैटरनिटी लीव यानी कि पितृत्व अवकाश देने का फैसला किया है। भारत में सबसे लम्बा पितृत्व अवकाश देने वाली पहली कंपनी बनी सेल्सफोर्स टेक ने अपने कर्मचारियों को बेहतर ज़िन्दगी देने की कोशिश के तहत यह निर्णय लिया है। कंपनी के मुताबिक वैतनिक पैटरनिटी लीव कर्मचारियों के लिए एक सही कदम है क्योंकि कई बार अभिभावकों को अवैतनिक अवकाश लेकर अपनी जिम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं। साथ ही यह अपने कर्मचारियों के साथ सही और अच्छे व्यवहार का तरीका भी है। पिता बनना एक बड़ी जिम्मेदारी का काम है। ऐसे में जब अभिभावकों को अवैतनिक अवकाश लेना पड़े तो स्थितियां और ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो जाती हैं। अब पितृत्व अवकाश के बारे में भी गंभीरता से सोचा जा रहा है। ख़ासकर भारत जैसे देश में, जहां बच्चे के जन्म के बाद सारी जिम्मेदारियां मां के हिस्से ही आती हैं। यूं भी देखने में आ रहा है कि हमारे परिवारों में बच्चे के जन्म और जिम्मेदारियों से जुड़ी बहुत सी बातों में अब पिता की भूमिका बढ़ रही है। यही वजह है कि तीन महीने की पैटरनिटी लीव दिए जाने का यह फैसला वैचारिक ही नहीं, व्यावहारिक रूप से भी बड़ा बदलाव लाने वाला है। गौरतलब है कि हमारे यहां सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए छठे वेतन आयोग में पितृत्व अवकाश की योजना लागू की गयी है। यह अवकाश कुल 15 दिनों का होता है। पिता बनने वाले पुरुष पूरी नौकरी के दौरान इसका दो बार उपयोग कर सकते हैं। खास बात यह है कि पितृत्व अवकाश को किसी भी दशा में अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। लेकिन निजी कम्पनियों के पुरुष कर्मचारियों के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है। लेकिन अब कई निजी कम्पनियां अपने कर्मचारियों की सहूलियत के लिए ऐसी सराहनीय पहल कर रही हैं। हालांकि अधिकतर कंपनियां 10 दिन से 2 हफ्ते तक ही पैटरनिटी लीव ही देती हैं लेकिन कुछ वक्त पहले माइक्रोसॉफ्ट जैसी कम्पनी ने पैटरनिटी लीव बढ़ाकर 6 हफ्ते की थी। इसी साल क्युमिंस इंडिया ने भी अपनी पैटरनिटी लीव एक महीने कर दी थी। मर्सर वैश्विक पितृत्व अवकाश रपट-2016 के अनुसार वैश्विक आधार पर करीब 38 प्रतिशत कंपनियां न्यूनतम वैधानिक नियमों से ऊपर पितृत्व अवकाश दे रही हैं। भारत विश्व के उन शीर्ष 10 देशों में शुमार है जहां सबसे ज्यादा कंपनियां अपने कर्मचारियों को पितृत्व या बच्चा गोद लेने के लिए वैधानिक आवश्यकता से आगे जाकर अवकाश प्रदान कर रही हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारत में वर्ष 2014 में करीब 60 प्रतिशत संगठन पितृत्व अवकाश प्रदान कर रहे थे जबकि 2016 में इनका प्रतिशत बढ़कर 75 प्रतिशत हो गया। वैसे दुनियाभर में जर्मनी की पितृत्व अवकाश की नीतियां सबसे उदार नीतियों में गिनी जाती हैं। जर्मनी में बच्चे के जन्म से तीन साल तक छुट्टी मिल सकती है। दरअसल, बीते कुछ सालों में हमारे यहां कामकाजी मांओं की संख्या तेज़ी से बढ़ी है। इनमें अधिकतर युवा महिलाएं हैं जो शिक्षा, बैंकिंग, आईटी और यहां तक कि सैन्य बलों में भी अपना अहम स्थान बना चुकी हैं। यही वजह है कि बीते साल मैटरनिटी लीव संशोधन बिल पारित कर मातृत्व अवकाश को 12 हफ्तों से बढ़ाकर 26 हफ्ते कर कर दिया गया था। इसके अलावा जो महिलाएं गोद लेकर या सैरोगेसी से मां बनती हैं, उनके लिए भी 12 हफ्तों के अवकाश का प्रावधान है। इस संशोधन के बाद भारत उन यूरोपियन देशों की सूची में शामिल हो गया था जो सबसे ज्यादा मातृत्व अवकाश देते हैं। वैसे भी हमारे यहां लम्बे समय से यह बहस जारी है कि पैटरनिटी लीव की अवधि भी बढ़ाई जाये। बीते साल ही प्रसूति अवकाश विधेयक, 2016 में संशोधनों के समय भारतीय मजदूर संघ ने एक माह के वैतनिक पितृत्व अवकाश का सुझाव दिया था। कुछ इसी तरह का सुझाव, सातवें वेतन आयोग के अध्यक्ष और उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त जज जस्टिस अशोक माथुर ने भी अपनी सिफारिशों में दिया था। आयोग की सिफारिश थी कि पिता को बच्चे के जन्म के समय 3 से 6 हफ्ते की छुट्टी मिलनी चाहिए। ध्यान रहे दुनिया में 65 से ज्यादा देशों में पिता को सवेतन पितृत्व अवकाश मिलता है। मां बनने के बाद बच्चे की संभाल और अपनी सेहत की अनदेखी के मोर्चों पर जूझने वाली महिलाओं के लिए भी पितृत्व अवकाश मददगार साबित होगा।

समाज में एकल परिवारों की बढ़ती संख्या इस जरूरत को और प्रासंगिक बनाती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रसव के समय और उसके बाद प्रसूता का पति साथ हो तो सभी काम बेहतर ढंग से संपन्न हो पाते हैं। ऐसे में निजी कंपनी का यह कदम वाकई सराहनीय है।

विद्वता और विनय

एक बार राजा ज्ञानसेन ने अपने दरबार में शास्त्रार्थ करवाया, जिसमें विद्वान भारवि विजेता घोषित हुए। राजा ने उन्हें हाथी पर बिठाया और स्वयं चंवर डुलाते हुए उनके घर तक गए। राजा ने भारवि को धन-धान्य से लाद दिया। भारवि का ऐसा सम्मान देख माता-पिता खुशी से गदगद हो गए। रास्ते में राजा ने भारवि का जगह-जगह स्वागत कराया, लोगों के द्वारा किए जा रहे सम्मान से भारवि को अभिमान हो गया। भारवि ने सम्मान के मद में चूर हो माता को प्रणाम कर पिता को मात्र अभिवादन किया। पिता ने भी भावहीन हो चिरंजीवी भर कह दिया। पिता की मुखमुद्रा पर खिन्नता देख भारवि ने माता से कारण पूछा। माता ने कहा-तुम्हारे विजयी होने के लिए तुम्हारे पिता ने कितनी साधना की, कितना परिश्रम किया, तुम यह भूल गए। शास्त्रार्थ के दसों दिन उन्होंने जल लेकर तुम्हारी सफलता के लिए उपवास रखा और इससे पूर्व तुम्हें पढ़ाने के लिए कितना श्रम किया, यह समझे बिना तुम विजय के अहंकार में इस शिष्टाचार को भी भूल गए कि पिता का सम्मान किस तरह करना चाहिए। विद्वता का अर्थ यह नहीं कि अपने अन्दर के विनय भाव को त्याग दो और अपने श्रेष्ठ जनों का सम्मान करना छोड़ दो। भारवि अपने पिता के चरणों में गिर पड़े। पिता ने भी भारवि को भरे हृदय से लगा लिया।

राशिफल

मेष : आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से आज का दिन लाभदायक रहेगा। लंबे समय का आर्थिक आयोजन पूरा कर सकेंगे। व्यवसाय में भी योजनाएं बना सकेंगे। परोपकार के उद्देश्य से किए गए कार्य से आपका मन प्रफुल्लित रहेगा, ऐसा गणेशजी बताते हैं।

वृषभ : परिश्रम के अनुपात में अल्प परिणाम मिलने पर भी आप निष्ठापूर्वक कार्य को आगे बढ़ाएंगे। आपके क्षेत्र की विशालता और वाणी की मधुरता अन्य लोगों को प्रभावित करेगी ऐसा गणेशजी बताते हैं।

मिथुन : गणेशजी कहते हैं कि अत्यधिक भावुकता आपके मन को संवेदनशील बनाएगी। विशेष रूप से जलाशय और स्त्रीवर्ग से सचेत रहना पड़ेगा। मन की परिस्थिति डावांडोल रहने के कारण निर्णयशक्ति का अभाव रहेगा।

कर्क : गणेशजी बताते हैं कि आज कार्य सफलता आपकी राह देख रही है। इसके कारण आपका आनंद उत्साह दोगुना होगा। ताजगी और प्रसन्नता का अनुभव होगा।

सिंह : गणेशजी के बताए अनुसार आपका दिन मिश्रित फलदायी रहेगा। लंबी अवधि के आयोजन आपको दुविधा में डालेंगे। कार्य में निर्धारित सफलता नहीं मिलेगी। परिवार में मेल-मिलाप का वातावरण रहेगा।

कन्या : आपकी वाणी का माधुर्य नए सौहार्दपूर्ण सम्बंध स्थापित करने में उपयोगी साबित होंगा। वैचारिक समृद्धि बढ़ेगी। व्यापार-धंधे में लाभ के साथ सफलता मिलेगी। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी बना रहेगा।

तुला: आज आपको स्वास्थ्य के विषय में ध्यान रखना पड़ेगा। मानसिक स्वस्थ्ता भी कम रहेगी। अविचारी और मनमाना व्यवहार आपको मुसीबत में डाल सकता है। वाणी पर संयम रखना पड़ेगा।

वृश्चिक : गणेशजी के आशीर्वाद से नौकरी-धंधा और व्यवसाय के क्षेत्र में आपको लाभ ही लाभ है। इसके साथ मित्रों, सगे- सम्बंधियों और बुजुर्गों की तरफ से भी लाभ प्राप्ति का संकेत है।

धनु : गणेशजी कहते हैं कि आज आपकी यश, कीर्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में उच्च पदाधिकारियों के खुश रहने से पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी। स्वास्थ्य बना रहेगा। परिवार में आनंद का वातावरण रहेगा।

मकर : गणेशजी कहते हैं कि बौद्धिक कार्य या साहित्य लेखन जैसी प्रवृत्तियों के लिए आज अनुकूल दिन है। आपने व्यवसाय में नई विचारधारा से कार्यों को नया स्वरूप देंगे।

कुंभ : गणेशजी आपको आज निषेधात्मक कार्यों और नकारात्मक विचारों से दूर रहने की सलाह देते हैं। झगड़े-विवाद से बचें, क्रोध और वाणी पर संयम रखें।

मीन : गणेशजी कहते हैं कि दैनिक कार्यों से बाहर निकलकर आज आप घूमने-फिरने और मनोरंजन के पीछे समय बिताएंगे। स्वजनों तथा मित्रों के साथ पिकनिक पर जा सकते हैं। सिनेमा, नाटक या बाहर भोजन करने जाने का कार्यक्रम आपको आनंदित करेंगा। कलाकार एवं कारीगरों को अपनी कला का प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. ठुड्डी पर के बाल, ठुड्डी, ठोढ़ी 3. विशेष और सामान्य (आदमी), आम और खास लोग (उ.) 5. इच्छा, हसरत, अभिलाषा 6. शारीरिक कोमलता, सुकुमारता (उ.) 7. सविनय, विनती पूर्वक 10. बिलख-बिलख कर रोना 11. कहानी, उपन्यास 12. कुशल, दक्ष, विशेषज्ञ 13. भार, दबाव 14. शुभ-अशुभ की पूर्व सूचना, शुभ अवसर पर होने वाला मंगल कार्य संबंधी गीत 15. एहसान, भलाई, हित 17. सूत काटने, लपेटने में काम आने वाली चर्खे से लगी सलाई 19. एक हिन्दी महीना, श्रावण 20. सप्ताह का एक दिन, बृहस्पतिवार।

ऊपर से नीचे

1. जंगल में लगी आग, दावाग्नि 2. मूल्य, दाम 4. स्वतंत्र, स्वाधीन 5. संकट, कष्ट, दर्द 7. लकड़ी, कन्या, कानों में पहनने का छल्ला, श्रेष्ठ 8. बेइज्जती, अनादार 9. शोभा, सुंदरता, बसंत ऋतु 10. तबाह करने वाला,विनाशक 11. इस समय 13. असुर, राक्षस, दैत्य 14 ए. गुरुमंत्र, बहुत अच्छी युक्ति 15. पर्व, त्यौहार 16. शिकायत, उलाहना, ग्लानि 17. वृक्ष, पेड़ 18. मुंह से निकलने वाला थूक जैसा पदार्थ।

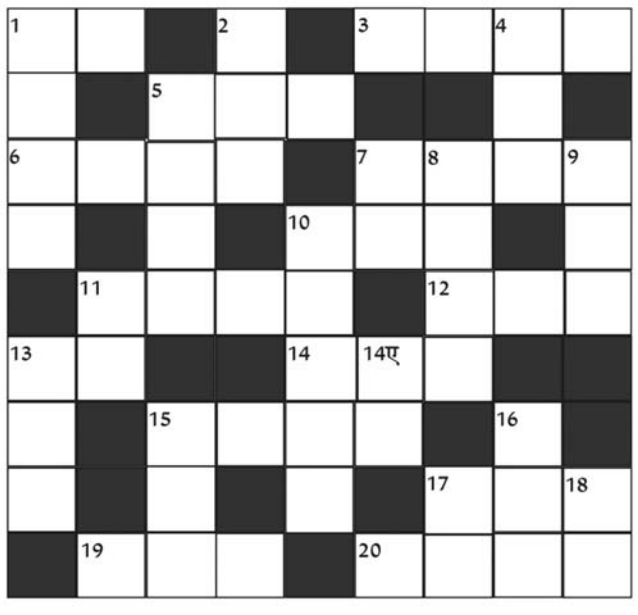

पिछले अंक का हल

खा	म	खां			इं			
स	ह		ब	र	सा	त		प
	क	हा	नी		न	क	च	ढ़ा
त			स्ब			ली		ई
क	या	म	त		क	फ	न	
दी		र्दा		बा	बू		ह	वा
र	ह	ना		ल	त	खो	र	
	वा		नौ	क	र			सा
भा	ई		का			बा	द	ल

सू-दोकू

	9			2				1
		5	1				3	
7				9		8		5
	8		3		7		5	
2		7				1		3
	4			1			8	
6		2			9			
	5		7			3		
		8		5			6	7

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.30का हल

7	8	2	6	3	1	4	5	9
6	4	1	8	5	9	2	7	3
9	3	5	4	7	2		1	8
2	6	3	1	9	7	5	8	4
5	7	8	3	6	4	1	9	2
1	9	4	5	2	8	7	3	6
4	5	7	2	8	3	9	6	1
3	1	6	9	4	5	8	2	7
8	2	9	7	1	6	3	4	5